* U A - 0 0 1 4 *

UA-0014

First Year B. A. Examination

March/April – 2012

Hindi : Paper - I

Time : Hours] [Total Marks :

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **F. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **HINDI : PAPER - 1**

☛ Subject Code No. : **0 0 1 4** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **NIL**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नों के अंक समान है।

१ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'रश्मिरथी' खंडकाव्य का मूल्यांकन कीजिए। १४

अथवा

कर्ण के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

२ 'नाश का त्यौहार' और 'गंगा माँग रही है–मस्तक' काव्य में व्यस्त राष्ट्र प्रेम का निरुपण कीजिए। १४

अथवा

'बीती विभावरी जागरी' काव्य में निरुपित प्रकृति का चित्रण कीजिए।

३ " 'रश्मिरथी' में परशुराम के चरित्र में मानवोंचित्त गुणों एवम् भावों का निरुपण हुआ है"–सिद्ध कीजिए। १४

अथवा

'सरस्वती–वंदना' काव्य का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

४ टिप्पणी लिखे : १४

(अ) 'रश्मिरथी' का शीर्षक।

अथवा

(अ) कर्ण–कुन्ती मिलन प्रसंग।

(ब) 'भिक्षुक' कविता में व्यक्त विचार।

अथवा

(ब) 'नौका विहार' में प्रकृत्ति–चित्रण

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १४

(१) ''एक ही गोद के लाल, कोख के भाई,
सत्य ही, लड़ेंगे हो, दो और लड़ाई?
सत्य ही, कर्ण अनुजों के प्राण हरेगा,
अथवा अर्जुन के हाथों स्वयं मरेगा?''

अथवा

''बेटा, धरती पर बड़ी दीन है नारी,
अबला होती सचमुच योषिता कुमारी।
है कठिन बन्द करना समाज के मुख को,
सिर उठा न पा सकती पतिता निज सुख को।''

(२) ''चाह नहीं सम्राटों के शब पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर सर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।''

अथवा

''छिपा रही थी मुख शशि–बाला,
निशि के श्रम से हो श्री–हीन,
कमल क्रोड में बंदी था अलि,
कोक शोक से दीवाना।''